

धरा के ऊपर

गुलाब के फूलों को उसके होंठों से स्पर्श करवाकर उसने कहा, "मेरे सुवासित पुष्प, जानती हो पुरुष किसका चयन करता है?"

फूलों की पंखुड़ियों के सुकोमल स्पर्श की प्रसन्नता से मुस्कान बिखर गई थी नारी के होंठों पर। वह उत्तर दे तो सकती थी, किन्तु...।

"पुरुष उसी नारी को अपनाता है जो उसके आदर्शों को प्यार करती है। इस स्थिति में चयन पहले नारी ही करती है...।"

नारी हल्का सा चौंक उठी। तब यह सुवासित पुष्प कहलवाने का गौरव कुछ भी नहीं था?

महज चन्द महीने ही तो बीते थे विवाह को, जब इसी शयन कक्ष में नारी पति के घुंघराले काले मुलायम बालों में अँगुलियाँ घुमा रही थी...किन्तु उसके अधर बार-बार प्यासे ही रह जाते थे...।

नारी ने सायास उसका चेहरा अपनी तरफ घुमाया।

"ऐसे नहीं पा सकोगी मुझे...।"

भाव जगत लहरा उठा, "क्या मतलब?"

"देखो, मेरे इन नेत्रों में कितने ख्वाब समाये हैं?"

"किन्तु मैंने तो तुम्हें बिरले ही नींद निकालते देखा है। अक्सर तुम जागते ही रहते हो। किताबें पढ़ते रहते हो। फिर ख्वाब कब देखते हो...?"

"ख्वाब देखने की भी एक उम्र होती है अन्नू। मैं उस उम्र में बेरोजगार था। सच तो यह है कि पढ़ने के लिये भी बहुत कुछ ना काफी था। फिर भी परिवार को आवश्यकताओं के कुम्भी नरक को झेलते देख मुझे लगा, मेरा रोजगार पाना बहुत जरूरी है। कुछ दिन तो घर छोड़कर भटकता रहा। कुछ मित्रों का सहारा मिलता रहा। विभिन्न घरों का आतिथ्य, घाट-घाट का पानी पीने के समान है। पणिहारियाँ भी मिलीं, लेकिन अर्थहीन जगत को सार्थक बनाने के लिये महज पायल की झंकार और पानी के उलीचने की कलकल पर्याप्त नहीं। किसी की अधिक पढ़ने की इच्छा हो, परन्तु अभिभावक न पढ़ा सकें। एक आक्रोश, एक तनाव ऐसे ही भरा रहता था मेरे मन के अन्दर। किसी भी शख्स में पूर्ण संतुलन नजर नहीं आया, मानवीयता नजर नहीं आई। मुझ जैसे अनेक मिले राहों में, जिन्होंने आवश्यकताएँ पूर्ण करने के चक्कर में खूब ठोकरें खाई थीं।"

“उस समय एक ख्वाब लिपट गया मेरे चित्त से। मानव का संतुलन, मानवीयता लौटानी है तो आवश्यकताएँ पूरी होने का संतुलन पहले आना चाहिए...।”

नारी बोली, “मैं तो यह अनुभव कर रही हूँ, गोया सारे शरीर की नस नस एक महानर शक्ति के समक्ष नतमस्तक हो रही है। मगर नाथ! जो संतुलन इन्सान के लिए, आप सोच रहे हैं, वह तो मनुष्य में, गीतों में, पुस्तकालय की किताबें बढ़ाने और गली-मोहल्ले की छोटी संस्थाओं के निर्माण से ही आ सकता है। पहले तो स्वयं को बिल्कुल विनम्र व लघु बनाकर, लघुतर से लघुतम व्यक्ति के अन्दर नये जगत की चेतना को जगाना पड़ेगा। आपके इन्हीं विचारों ने मुझे आपकी ओर आकर्षित किया था और चली आई थी आपके चरणों में। आपकी रोजाना की सभी आवश्यकताएँ श्रेष्ठ से श्रेष्ठ तरीकों द्वारा एक सामान्य नारी की तरह पूर्ण करती रही हूँ।”

“उफ, अन्नु” किसी पीड़ा से व्याकुल पुरुष ने करवट बदल ली।

भाव जगत में आग लग गई। रात्रि पर्यन्त रानी को उसके शोले सुलगाते रहे। वह आँगन के कोने में जा खड़ी हुई। वहाँ जो भी कूड़ा करकट पड़ा था, उसे बुहार कर बाहर फेंक दिया। चाँदनी ने उसके गोरे बदन पर स्वयं को बिछा दिया। स्वर्ण जल रहा था, आँगन की छोटी सी दीवार द्वारा कॉलोनी से विलग हुए इस घर में इतनी आग लगी थी और फिर भी सारी कॉलोनी गहरी नींद में सो रही थी। हाँ, वह आवश्यकताओं के कोल्हू में पिसते थककर जो सोई थी।

कब भोर हुई और निद्रा देवी ने इस नारी को अपने आलिंगन में आबद्ध किया, इसका पता स्वयं उसे भी नहीं चला।

जागकर उसने देखा, कॉलोनी बहुत पहले जाग चुकी है और देखा कि अन्नु का मूल्यांकन करने वाला बिस्तर से गायब हो चुका है। एक छोटे से कागज के टुकड़े पर लिखा था, “बिल्कुल साधारण सामान्य स्त्री जैसी जीवन संगिनी, मेरे ख्वाबों की रानी नहीं हो सकती...। यह पीड़ा कितने दिनों से किसी तरह व्यथित करती रही है मेरे भाव जगत को, तुम नहीं समझ सकोगी...। मेरा विवेक मुझे अन्दर ही अन्दर काटता रहता है। जब तक दो भुजाओं वाला प्रत्येक इन्सान अपनी आवश्यकताएँ स्वयं पूरी नहीं कर सकता, तब तक मानव जाति का उद्धार संभव नहीं”

अन्नु का रात्रि पर्यन्त अग्रि में जलता शरीर पेड़ के एक भारी तने की तरह सुलग रहा था...। मीरा ने पुकारा, “जोगी मत जा।” किन्तु उसका अभिमानी मन किसी के पाँव की बेड़ी बनने से इंकार कर उठा। विवाह रचाते समय कई बेड़ियाँ अन्नु के पाँवों तक आई थीं। इसने उन्हें ठुकरा दिया था। सखी सहेलियाँ सभी नातों को तोड़ा जा सकता है, मगर जब माता-पिता की मोह और ममता वाली बेड़ी आई तब अन्नु में उसे ठुकराने का साहस नहीं था। उसने बड़े आदर सहित उसे ऊपर आले में रख दिया।

अब भी बोली, “यशोधरा हूँ मैं, गौतम के स्थूल चरणों को पकड़ना मेरी प्रवृत्ति नहीं है।” फिर भी उसके कदमों की धूलि मस्तिष्क पर लगा ली थी। एक विवश मुस्कान सिमट आई उसके अधरों पर, यह सोचकर कि, समझदारी और ज्ञान का आधार किसी समय खुद भी दिग्भ्रमित हो जाता है और भावुक बन जाता है राहगीर...।”

अकेला घर, सौंदर्य, कमसिन उम्र, चारदीवारी के अंदर कोई अघटित घट सकने की सँभावना थी। अन्नु ने दीवारों को मित्र बना लिया। उसकी दोस्ती के दामन में सारी कॉलोनी सिमट आई। कहीं कोई गायन विद्या की क्लास थी, नये कौमी गीत और धुनें।

पति अन्नु पर चिल्लाते हुए बोला “मेहरबानी करके यह बाहर की दुनिया समेट कर आकर घर सम्भालो। इतनी अव्यवस्था.....।”

अन्नु ने प्रति प्रश्न किया, “जब आदर्शों के लिए गृह त्याग गये थे, तब मन के संसार को कितने जालों ने उलझा लिया था उनके ऊपर आपकी नजर ही नहीं गयी थी...। अब तो मेरे आदर्शों ने मेरा समय ही चुरा लिया है।”

पुरातन विचारों की तर्जें और तराने मिलकर गूँजने लगे। कहीं एक लाइब्रेरी भी खुल गई। स्कूल तो था ही, उसकी अध्यापिकाओं को बुलाकर अन्नु ने हर माली के हाथ में नया खाद पकड़ा दिया। कॉलोनी में नये ढंग की दुनिया आबाद हो गई। ऐसी दुनिया जिसमें जितने फूल थे, उससे दुगुने काँटे थे। कड़ियों की तरस खाती नजरें जब अन्नु पर पड़ती थी, तो वह स्वयं को अपने अस्तित्व से नीचे फिसलता महसूस करती थी। किन्तु कुछ लोगों की ईर्ष्या और धिक्कार पर अन्नु का मुख अधिक तेजस्वी हो जाता था। कुछ ने यों भी कहा, “ऐसी होगी तभी तो पति भी छोड़ गया है।” अन्नु कानों में अंगुलियाँ ठूँस ऐसे ताने सुनती थी, मगर ऐसे समय पर वह सीता माता को भूमि से बाहर आकर अपनी ओर हाथ की दो अंगुलियाँ बढ़ाते महसूस करती थी, जैसे कह रही हो, “भारत के पतिदेव आज भी आदर्श के अधिक पुजारी हैं।”

अन्नु उस स्वप्नमयी सीता को कहती थी, “इसीलिये तो अमर है... मगर विलाप भी वरदान है अन्यथा लव कुश सी हस्तियों का अस्तित्व प्राप्त कर सकती थी?” ऐसे समय अन्नु अपने नन्हें दीपक को आलिंगन में लेकर शान्त हो जाती थी।

अचानक एक दिन वह घर में प्रविष्ट हुआ। अन्नु शकुंतला की तरह मुख फेरकर नहीं खड़ी हुई, न सीता की तरह धरती का आश्रय मांगा। नन्हें दीपक को उसकी गोद में रखकर बड़े सहज भाव से कहा “आप आ गये?”

वह देखता रहा अन्नु को, खामोश। शयनकक्ष वाली रात्रि की स्मृति पुनः जीवन्त हो श्वास लेने लगी। तब भी हँसकर बोला, “इतने समय के पश्चात मुझे घर में देखकर तुम्हें कोई आश्चर्य नहीं हुआ?”

“राजा दुष्यन्त ने भी अपनी शकुन्तला को कई वर्षोंपरान्त आकर देखा था।” अन्नु की निगाहें धरती की ओर थीं पर उसके कंधे सीधे तने हुए थे।

दीपक पिता की जेब से पेन पेंसिल निकालने में व्यस्त था। उस तरफ सचमुच अभी ही ध्यान गया। उसका मस्तिष्क चूम कर बोला, “अरे हाँ, तब...। उस तब के पश्चात उसका हल्का चौंकना गोया किसी गलती के अहसास का गवाह था।

लेकिन अन्नु जानती है कि उस रात्रि की सुलगती नारी के पास किसी की भी गलती, गलती नहीं रहती। बस उसने तो सभी को सभी कुछ के लिए क्षमा दान दे दिया है।

पहले आर्थिक संतुलन कायम करना है। देश की जनता में मनुष्यता लौटाने वाले आदर्श के लिए पति कितना कुछ कर सका है, इसका अनुमान लगाना अन्नु के लिए कठिन था। मगर उसे अपने गृहस्थ जीवन में आदर्शों और आर्थिक स्थितियों का संतुलन कायम करने में अत्यधिक तकलीफ हुई थी। पति की अनुपस्थिति में उसने स्वयं को इतना फैला लिया था, कि अब उसे पति और दीपक की सेवा करने में कठिनाई की अनुभूति होने लगी। कभी पति की कमीज के बटन धोबी तोड़कर आया है, कभी उसका रूमाल गायब है, कभी भोजन तैयार नहीं।

पति एक विद्यालय के प्राचार्य बन गए। अपने आदर्शों के विकेन्द्रीकरण हेतु उसे पर्याप्त जमीन मिल गयी थी। फूल भी खिल रहे थे कि एक दिन पति अन्नु पर चिल्लाते हुए बोला, “मेहरबानी करके यह बाहर की दुनिया समेट कर आकर घर सम्भालो। इतनी अव्यवस्था....।”

अन्नु हँसने के सिवा भला कर ही क्या सकती थी? वह टकटकी लगाए पति के चेहरे को पढ़ती रही...।

पति की चीख पुनः गूँज उठी, “कौन कहेगा, यह घर है? सभी दीवारों पर मकड़ी के जाले...।”

अन्नु ने प्रति प्रश्न किया, “जब आदर्शों के लिए गृह त्याग गये थे, तब मन के संसार को कितने जालों ने उलझा लिया था उस पर आपकी नजर ही नहीं गयी थी...। अब तो मेरे आदर्शों ने मेरा समय ही चुरा लिया है।”

“यह क्या ब्यूरोक्रेसी हो रही है आदर्शों के लिए?” अन्नु के पास उत्तर नहीं था। उसका मन भर आया फिर भी पति को उत्तर के लिए प्रतीक्षित देख, जिसने नारी के जिस एकाकीपन के आलम को भरने के लिए सैकड़ों तूफान सहे थे वह न जाने कैसे कह उठी, “अब शायद मुझे ही एक साधारण सामान्य पति का त्याग करना पड़ेगा...।” कहने के पश्चात उसे लगा, सारा घर कॉलोनी हो गया है। संसार की दीवारें भी इस अप्रत्याशित धमाके के कारण हिल उठी हैं।

सदियों के बाद एक आदर्शवादी राम को लगा, आदर्श तुच्छ है अगर उसके नीचे मानव प्रेम और आदर सम्मान की धरती नहीं है। यह बात सीता ने उसे धरा में दबकर नहीं, धरा के ऊपर रहकर सिद्ध करके बतायी है।

राम इस नव चेतनायुक्त नारी को देखता रहा। फिर दो कदम आगे बढ़कर उसके सिर पर हाथ रखकर बोला, “नहीं, अब ऐसा नहीं होगा।”

अनुवाद : डॉ. कमला गोकलानी

